e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 11, November 2022

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111019|

महाभारत कथाकाव्य के हिंदी रूपांतर और पंडवानी

Monika

Research Scholar, Hindi Department, NIILM University, Kaithal (Haryana), India

सार

पंडवानी छत्तीसगढ़ का वह एकल नाट्य है जिसका अर्थ है पांडववाणी - अर्थात पांडवकथा, यानी महाभारत की कथा। ये कथाएं छत्तीसगढ़ की परधान तथा देवार छत्तीसगढ़ की जातियों की गायन परंपरा है। परधान गोंड की एक उपजाति है और देवार धुमन्तू जाति है। इन दोनों जातियों की बोली, वाद्यों में अन्तर है। परधान जाति के कथा वाचक या वाचिका के हाथ में "किंकनी" होता है और देवारों के हाथों में रूँझू होता है। परधानों ने और देवारों ने पंडवानी लोक महाकाव्य को पूरे छत्तीसगढ़ में फैलाया। तीजन बाई ने पंडवानी को आज के संदर्भ में ख्याति दिलाई, न सिर्फ हमारे देश में, बल्कि विदेशों में। पंडवानी की दो शैलियाँ हैं - कापालिक और वेदमती

1. कापालिक शैली

कापालिक शैली जो गायक गायिका के स्मृति में या "कपाल"में विद्यमान है। कापालिक शैली की विख्यात गायिक है तीजनबाई, शांतिबाई चेलकने, उषा बाई बारले।

2. वेदमती शैली

वेदमती शैली जिसका आधार है शास्र, कापालिक शैली है वाचक परम्परा पर आधारित और वेदमती शैली का आधार है खड़ी भाषा में सबलसिंह चौहान के महाभारत, जो पद्यरुप में हैं। वेदमती शैली के गायक गायिक वीरासन पर बैठकर पंडवानी गायन करते है। श्री झाडूराम देवांगन, जिसके बारे में निरंजन महावर का वक्तव्य है "महाभारत के शांति पर्व को प्रस्तुत करनेवाले निसंदेह वे सर्वश्रेष्ठ कलाकार है।" एवं पुनाराम निषाद तथा पंचूराम रेवाराम पुरुष कलाकारों में है जो वेदमती शैली के अपनाये है। महिला कलाकारों में है लक्ष्मी बाई एवं अन्य कलाकर। स्थानीय पारंगत बताते हैं कि वास्तव में सबलसिंह चौहान ग्रन्थ पर आधारित शैली को पंडवानी न कहकर महाभारत की एक शैली कहा जाना चाहिए चूँकि पंडवानी का छत्तीसगढ़ में प्रचार प्रसार ब्राह्मणेत्तर परधान एवं देवार गायकों के पूर्व में ही स्थापित कर दिया था, इसलिये बाद में विकसित हुई वेदमती शैली के ब्राह्मणेत्तर जाति के कलाकारों ने उसी रुढ़ नाम को अपनी शैली के लिये अपना लिया। उसके कारण वे ब्राह्मण एवं अन्य द्विज जाति के लोगों के इस आरोप से भी बचे रहे कि वे अनधिकृत रूप से महाभारत का प्रवचन करते हैं और दूसरी ओर इन्हें पंडवानी नाम की लोकप्रियता का भी लाभ प्राप्त हुआ।

परिचय

महाभारत हिन्दुओं का एक प्रमुख काव्य ग्रंथ है, जो स्मृति वर्ग में आता है। कभी कभी केवल "भारत" कहा जाने वाला यह काव्यग्रंथ भारत का अनुपम धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक ग्रंथ हैं। विश्व का सबसे लंबा यह साहित्यिक ग्रंथ और महाकाव्य, हिन्दू धर्म के मुख्यतम ग्रंथों में से एक है। इस ग्रन्थ को हिन्दू धर्म में पंचम वेद माना जाता है।[1] यद्यपि इसे साहित्य की सबसे अनुपम कृतियों में से एक माना जाता है, किन्तु आज भी यह ग्रंथ प्रत्येक भारतीय के लिये एक अनुकरणीय स्रोत है। यह कृति प्राचीन भारत के इतिहास की एक गाथा है। इसी में हिन्दू धर्म का पवित्रतम ग्रंथ भगवद्गीता सन्निहित है। पूरे महाभारत में लगभग १,१०,००० श्लोक हैं, जो यूनानी काव्यों इलियड और ओडिसी से परिमाण में दस गुणा अधिक हैं। हिन्दू मान्यताओं, पौराणिक संदर्भो एवं स्वयं महाभारत के अनुसार इस काव्य का रचनाकार वेदव्यास जी को माना जाता है। इस काव्य के रचयिता वेदव्यास जी ने अपने इस अनुपम काव्य में वेदों, वेदांगों और उपनिषदों के गुह्यतम रहस्यों का निरुपण किया हैं। इसके अतिरिक्त इस काव्य में न्याय, शिक्षा, चिकित्सा, ज्योतिष, युद्धनीति, योगशास्त्र, अर्थशास्त्र, वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र, कामशास्त्र, खगोलविद्या तथा धर्मशास्त्र का भी विस्तार से वर्णन किया गया हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111019|

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक परंपराओं से मेरा मोह बचपन से रहा है। इसी मोह से पंडवानी और दूसरे लोकरंजन में मेरी रूचि पैदा हुई है। हम बचपन से विभिन्न लोक कलाकारों से पंडवानी सुनते आये हैं एवं उनकी प्रस्तुतियों को प्रत्यक्षत: या टीवी आदि के माध्यमों से देखते आये हैं। पद्मभूषण श्रीमती तीजन बाई तो अब पंडवानी की पर्याय बन चुकी है और हममें से ज्यादातर लोगों नें तीजन बाई की प्रस्तुति ही देखी हैं, लोक स्मृति के मानस पटल पर जो छवि पंडवानी की उभरती है वो तीजन की ही है। तीजन की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए श्रीमती रितु वर्मा नें भी पंडवानी गायकी को भली भांति साधा है। उसकी प्रसिद्धि भी काफी उंचाईयों पर है, पर इन दोनों की प्रस्तुतिकरण में अंतर है और इसी अंतर को वेदमति व कापालिक शैली का नाम दे दिया गया है। हम पंडवानी के इन शैलियों के संबंध में छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक परंपराओं के मर्मज्ञों की लेखनी को पढ़ कर अपने स्वयं की संतुष्टि चाहते रहे हैं कि क्या सचमुच इन शैलियों नें समयानुसार परंपरा का रूप ले लिया है या शैलियों को कतिपय विद्धानों नें पूर्व पीठिका में लिखकर स्थापित कर दिया है। वाचिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी लोक आनंद की प्रस्तुति की परंपरा में समय का प्रभाव भी पड़ता है और पारंपरिक प्रस्तुति में कुछ अंतर आने लगता है। हमारी समझ के अनुसार छत्तीसगढ़ की जानी पहचानी लोक विधा पंडवानी में भी इसी तरह के समयनुकूल परिवर्तन आये हैं। पंडवानी गायकी की इस परंपरा में आये परिवर्तन को शाखा का नाम दे दिया गया है। इन दोनों शाखाओं के संबंध में उपलब्ध लेखों में कहीं भी अलग से विशिष्ठ रूप में कुछ नहीं लिखा गया है। प्रदेश की संस्कृति पर लेखन करने वाले लेखकों नें पंडवानी व पंडवानी के गायकों के संबंध में लिखते हुए संक्षिप्त में वेदमति व कापालिक शाखाओं का उल्लेख किया है, और सतही तौर पर यह स्वीकार किया है कि बैठकर गाने की शैली को वेदमति व खड़े होकर प्रस्तुति देने की शैली को कापालिक कहा जाता है। लोक कलाकारों के संबंध में निरंतर लिखने वाले डॉ. परदेशीराम वर्मा जी नें अपने आलेख में लिखा है कि 'पंडवानी विधा में दो शैलियां प्रचलित है। एक मंच पर बैठकर गाने की शैली। इसे वेदमती शैली कहते हैं। ..... कापालिक शैली में कलाकार खड़े होकर अभिनय सहित मंच पर कला का जौहर दिखाता है। यह शैली महिलाओं के लिए अनुकूल और प्रभावशाली सिद्ध हुई।'[2]

पंडवानी की इन शैलियों के संबंध में छत्तीसगढ़ के ख्यात लोक कला निदेशक राम हृदय तिवारी जी नें अपने एक लेख में विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है यथा 'वेदमति और कापालिक शाखाओं के नाम से विभक्त इस पंडवानी के जिस स्वरूप से हम सब ज्यादा परिचित हैं – वह कापालिक शाखा की विख्यात शैली है, जो शास्त्रीय कथा को लोकरंग के नये परिधान देकर पूरे आत्म विश्वास के साथ हमारे सामने लाती है। ऐसा कहा जाता है कि कापालिक शाखा का अभ्युदय वेदमति शाखा की पारंपरिकता के विरोध स्वरूप हुआ। कापालिक शाखा के गायकों नें समयानुकूल लोकरूचि के वाद्यों का समावेश अपनी प्रस्तुति में किया। गायकी की नयी आक्रमक शैली का अविष्कार किया। गाथा को अंचल की प्रचलित लोक धुनों में बांधा और पूरी सजधज के साथ प्रसंगानुकूल एकल अभिनय की शुरूआत हुई जिसका चरमोत्ककर्ष आज भी विश्व विख्यात पंडवानी गायिका पद्मभूषण तीजन बाई में देखा जा सकता है। पंडवानी की यह आकर्षक शैली गायन के साथ आंशिक नृत्य नाट्य का भी आनंद देने में पूर्णत: सक्षम है, इसीलिए कुछ विद्वानों नें इसे फोक बेले की संज्ञा से भी विभूषित किया है। इस विधा में संगीत, भावाभिनय और कथा व्याख्या, तीनों का आनुपातिक समिश्रित सौंदर्य सचमुच सम्मोहन पाश में श्रोताओं को बांध लेता है ।'

छत्तीसगढ़ के लोक परंपराओं एवं पंडवानी पर विशद अध्ययन व शोध डॉ.विनय कुमार पाठक के निर्देशन में डॉ. बल्दांउ प्रसाद निर्मलकर जी नें किया है। निर्मलकर जी के शोध ग्रंथ 'पांडव गाथा पंडवानी और महाभारत' के नाम से बिलासा कला मंच से प्रकाशित हुआ है। छत्तीसगढ़ के पंडवानी के संपूर्ण अध्ययन के लिए यह ग्रंथ एक अहम दस्तावेज है।

इस ग्रंथ में डॉ.निर्मलकर जी नें वैदिक महाभारत कथा एवं वाचिक परंपरा में गाये जाने वाले महाकाव्य पंडवानी का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। डॉ. निर्मलकर नें इस ग्रंथ में पंडवानी का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है जिसमें इन दोनों शैलियों का उल्लेख है वे लिखते हैं 'वेदमति पंडवानी से आशय उन गीतों से है, जिनकी कथा महाभारत सम्मत है, अर्थात बुद्धिमानों से सम्मत या जो वेद से अनुमोदित हैं, वह कथा गायन इसके अंतर्गत सम्मिलित है। इसे बैठकर गाया जाता है। वेदमति पंडवानी के अंतर्गत आदिपरब, सभापरब, उद्यमपरब, भीष्मपरब, द्रोणपरब, कर्णपरब, सैलपरब, तिलकपरब, अश्वभमेध, स्वर्गारोहण परब, मूलपरब आदि छत्तीसगढ़ी रूपों में समाहित है। संदर्भित शाखा के गायकों का विश्वास है कि सांतपरब की कथा कहने से गायक शांत (मृत) हो जावेगा। इस अंधविश्वास के कारण शांतपरब का गायन वर्जित है। ..... इसके प्रमुख गायक श्री झाडूराम जी देवांगन व श्री पूनाराम जी निषाद हैं।'[3]

और 'कापालिक गीत वे हैं जो महाभारत के किसी पर्व में नहीं मिलते। केवल छत्तीसगढ़ के गायकों में मिलते हैं। इन गायकों की कथाएं कपोल कल्पित होती है। इसमें लोक विश्वास की इतनी गहरी छाप पड़ी है कि कथाएं कपोल कल्पित होकर भी पाण्डवो से संबंद्ध मानी जाती हैं। इसे खड़े-खड़े गाया जाता है। इसकी प्रमुख गायिका श्रीमति तीजनबाई है'

डॉ. बल्दाउ प्रसाद निर्मलकर जी नें पंडवानी की शैली के संबंध में पूरे शोध ग्रंथ में इतना ही लिखा है। इस पर पंडवानी के अन्य पहलुओं की भांति उन्होंनें अपना स्वयं का कोई निष्कर्ष नहीं दिया है। किन्तु पंडवानी के इन दो शाखाओं पर अपनी विस्तृत राय देते हुए इस ग्रंथ के शोध निर्देशक डॉ.विनय कुमार पाठक नें भूमिका में स्पष्ट किया है – 'छत्तीसगढ़ी में पंडवानी गायन की परंपरा अत्यंत प्राचीन है लेकिन इसकी उत्पत्ति से लेकर उसकी प्रचलित शैली के संदर्भ में अधिकांश लोगों में भ्रम धारणा घर कर गई है,

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111019|

उसका एक प्रमुख कारण मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद से प्रकाशित महंगा मोनोग्राफ और इसी तरह से शोध से दूर अन्य आलेख हैं। जैसा कि देवारों के संदर्भ में प्रकाशित मोनोग्राफ हैं। ये सब सतही सामाग्री ही नहीं परोसते, वरण् गलत प्रचार का आश्रय लेते हैं।

यह धारणा एकदम भ्रांत है कि सबल सिंह चौहान के महाभारत से 'वेदमतिशाखा' का पारायण होता है। इससे तो पंडवानी गायन की परंपरा आधुनिक ही निर्दिष्टि होगी जबकि इसके नाम से ही स्पष्ट है कि 'वेदमति' अर्थात् महाभारत वेद के मति से युक्त व प्रमाणित प्रसंग लोक वेद मति 'मंजूलाकूल' सदृश्य अत्यं प्राचीन काल से लोक गाथा के रूप में प्रवाहमान है। जबकि इसकी दूसरी शाखा 'कापालिक' काल्पनिक छत्तीसगढ़ी मानसिकता और कल्पानाशीलता का संयोजन है। महाभारत की कथा की कपाल क्रिया अर्थात इतिहास में कल्पना का समावेश अथवा महाभारत की जटिल कथा का सरल व छत्तीसगढ़ी परिवेश में लोक के अनुरूप कथ्य व घटना का सामंजस्य कापालिक शैली है।

इस दृष्टि से यदि विवेचना किया जाए तो वेदमति शाखा लोक गाथा की कोटि में नहीं आवेगी। इसका अर्थ भी यही होगा कि यदि पहला शिष्ट वर्ग या शास्त्रीय आधार पर केन्द्रित है तो दूसरा लोक में प्रचलित है, लेकिन ऐसा है नहीं। सबल सिंह चौहान विरचित 'महाभारत' के पूर्व पंडवानी गायन में ऐसा भेद रहा होगा लेकिन अब वे लोकगाथा गायकों में दोनो का सामंजस्य है, अत: किसी को वेदमति शाखा का प्रतिनिधि कहना गलत होगा। बैठकर और खडे होकर पंडवानी प्रस्तुति के आधार पर भी यह भेद उचित जान नहीं पड़ता।

यह सहीं है कि श्रीमति तीजनबाई के पूर्व के प्राय: सभी पण्डवानी गायक बैठकर गाथा प्रस्तुत करते रहे हैं लेकिन जब तीजन बाई खड़ी होती है, तब पण्डवानी थिरकने लगता है। क्या इसका यह अर्थ हुआ कि कापालिक शैली की जन्म दात्री श्रीमती तीजन बाई है ? इसके पूर्व यह शैली किस रूप में थी, क्या किसी के पास उत्तर है ? स्पष्ट है, ये दोनों शैलियां जरूर प्रचलित हैं लेकिन इसमें शास्त्रीयता दिखलाकर लक्ष्मण रेखा खींचना लोकगाथा के साथ अन्याय करना होगा।[4]

स्पष्ट है, पंडवानी महाभारत का छत्तीसगढ़ी रूपांतरण व यहां के लोक की कल्पनाशीलता का संयोजन है, फलस्वरूप कापालिक शैली से असंपृक्त नहीं है। सबलसिंह चौहान प्रणीत महाभारत के बाद पंडितों की महाभारत पारायण की प्रथा प्राय: शिथिल होने के बाद वेदमति के इसी रूप में दिखी जिसका कालांतर में छत्तीसगढ़ी करण और लोकगायकी करण होने से यह वेदमति शाखा के रूप में जानी गई तथा इससे परे कई युगों से प्रचलित और युगीन तत्वों से जुड़ने के पश्यात महाभारत से सम्य रखते हुए भी अन्यान्यो अर्थों में वैषक्य स्थापित करने वाली घटना व कथा जुड़ती चली गई। तीजन बाई की अंतर्राष्ट्रीय लोकप्रियता नें पंडवानी गायन के प्रति महिलाओं के रूझान को उद्दीप्त किया। इस दृष्टि से झाडूराम देवांगन व पूनाराम निषाद की परंपरा प्राय: लुप्त प्रतीत होती है। इस दृष्टि से वेदमति शैली के संरक्षण का संकट आज की महती आवश्यकता है।'

इसी चिंता के साथ राम हृदय तिवारी जी कहते हैं कि 'वेदमति शाखा वाली पंडवानी की शैली अब लगभग बिखराव अथवा समाप्ति के कगार पर है, मगर सुविख्यात कापालिक शैली की सलिला आज पूरे वेग से प्रवाहमान है । अपनी संम्पूर्ण सरसता और मधुरता के साथ ।'

आशा है छत्तीसगढ़ की लोकगाथा पंडवानी की वेदमति एवं कापालिक शाखा के संबंध में प्रमुख लेखकों के द्वारा लिखे गए अंशों को पढ़कर पाठक इन दोनों शाखाओं के बीच के अंतर को समझ सकेंगें. अवसर मिला तो पंडवानी पर कुछ और चर्चा के साथ उपस्थित होंगें.

विचार-विमर्श

पंडवानी - छत्तीसगढ़ का वह एकल नाट्य है, जिसके बारे में दूसरे देश के लोग भी जानकारी रखते हैं। तीजन बाई ने पंडवानी को आज के संदर्भ में ख्याति दिलाई, न सिर्फ हमारे देश में, बल्कि विदेशों में।

पंडवानी का अर्थ है पांडववाणी - अर्थात पांडवकथा, महाभारत की कथा। ये कथा "परधान" तथा "देवार" जातियों की गायन परंपरा है। परधान है गोडों की एक उपजाति और देवार है धुमन्तू जाति। इन दोनों जातियों की बोली, वाद्यों में अन्तर है। परधान जाति के कथा वाचक या वाचिका के हाथ में होता है "किंकनी" और देवारों के हाथों में "रुँझू"। परधानों ने और देवारों ने पंडवानी लोक महाकाव्य को पूरे छत्तीसगढ़ में फैलाया।

गोंड जनजाति के लोग पूरे छत्तीसगढ़ में वास करते हैं। परधान गायक अपने जजमानों के घर में जाकर पंडवानी सुनाया करते थे। इसी तरह पंडवानी धीरे धीरे छत्तीसगढ़ निवासी के अवचेतन में अपनी जगह बना ली। देवार जाति, ऐसा कहा जाता है कि गोंड बैगा भूमिया जातियों से बनी है। बैगा है एक जाति। इसके अलावा गांव में देवता के पुजारी को भी बैगा कहा जाता है। ये बैगा झाड़ फूँक में माहिर होते हैं तथा जड़ी बूटियों के बारे में उनका ज्ञान गहरा होता है। मण्डला क्षेत्र में जो ग्राम पुजारी होते हैं, वे अपने आपको बैगा नहीं कहते

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111019|

हैं। वे अपने आप को देवार कहते हैं। देवार गायक भी पंडवानी रामायणी महाकाव्य गाते हैं। देवार लोग कैसे घुमन्तु जीवन अपना लिया, इसके बारे में अलग अलग मत है।

परधान गायक हमेशा गोंड राजाओं की प्रशंसा करते हुए गीत गाया करते थे। उनके गीतों के माध्यम से गोंडो के अतीत जीवित रही है। कुछ लोग परधान को गोंडो के चारण कवि कहते हैं। उनके गोंडवानी और करम सैनी गोंड जनजाति के अतीत के बारे में है जिसमें इतिहास एवं मिथकों की झलके हैं।

परधान पण्डवानी महाभारत पर आधारित होने के साथ-साथ गोंड मिथकों का सम्मिश्रण है। अगर महाभारत का नायक अर्जुन है तो पण्डवानी का नायक है भीम। भीम ही है जो पाण्डवों की सभी विपत्तियों से रक्षा करता है। पण्डवानी में माता कोतमा कुन्ती को कहा गया है। गान्धारी को गन्धारिन। गन्धारिन के इक्कीस बेटे दिखलाए गए हैं। पण्डवानी में जिस क्षेत्र को दिखाया गया है, वह छत्तीसगढ़ ही है। पाण्डव जहाँ रहते थे उसे जैतनगरी कहा गया है। कौरवों के निवास स्थान को हसना नगरी कहा गया है। पण्डवानी में पाण्डव तथा कौरव - दोनों पशुपालक है। पाण्डव और कौरव पशुओं को लेकर चराने जाते थे। पशुओं में थे गाय, बकरियाँ और हाथी। कौरव हमेशा अर्जुन को तंग किया करते थे और भीम ही थे जो कौरवों को सबक सिखलाते थे।

पण्डवानी में कौरवों ने एक बार भीम को भोजन के साथ विष खिलाकर समुद्र में डुबा दिया। भीम जब पाताल लोक में पहुँचता है, सनजोगना उसे अमृत खिलाकर पुनर्जीवित करती है। सनजोगना थी नाग कन्या, पाताल लोक में भीम और सनजोगना का विवाह होता है। कुछ दिन के बाद भीम छटपटाने लगता है, अपना माँ और भाईयों को देखना चाहता है। तब सनजोगना भीम को पाताल लोक से समुद्र तट पर ले आती है। भीम अपनी माता कोतमा और चार भाईयों के पास पहुँचकर बहुथ खुश हो जाता है। जब कौरवों ने लख महल में पाण्डवो को मारना चाहा, भीम ही था जो पाताल लोक तक एक पथ का निर्माण करता है और सबकी सुरक्षा करता है। इस घटना के बाद भीम अपनी माँ और भाईयों को लेकर बैराट नगर पहुँचता है। बैराट नगर के राजा का नाम संगराम सिंह है। उसी बैराट नगर में कोचक का भीम वध करता है।[5]

पण्डवानी में महाभारत के युद्ध को महाधान की लड़ाई बताया गया है। और इस युद्ध के संदर्भ में द्रौपदी की सोच बहुत ही अलग दिखाई गई है। जैसे द्रौपदी सोचती है कि कौरवों के खिलाफ इस युद्ध में पान्डव कभी जीत नहीं पायेंगे। क्यों न मैं कौरवों से विवाह करु? ये सोचकर द्रौपदी पांडवों को भोजन के साथ विष देती है, और पांडवों की मृत्यु के बाद एक घड़े में हल्दी घोलकर हसनापुर की ओर चल देती है। घड़ा अपने सिर पर रख द्रौपदी चलती रहती है और जब हसनापुर पहुँचती है, तब वह हल्दी पानी कौरव भाईयों पर डाल कर उन इक्कीस भाईयों की पत्नी बन जाती है। उधर पांडवों को मृत देख माँ कोतमा अयोध्या जाती है और अपने भाई रामचन्द्र को सब बात बताती है। यहाँ महाभारत और रामायण एक हो जाता है। रामचन्द्र पहले अमृत छिड़कते हैं पांडवों पर और उसके बाद बेल का डंडा लाकर उन भाईयों को सुंघाते हैं। पांडव पुनर्जीवित हो जाते हैं। इसके बाद जब भीम द्रौपदी को लेने जाते हैं, द्रौपदी देवी बनकर चारों तरफ आग फैलाती है। उनकी जीभ बाहर निकल आती है और नौ कोस तक फैल जाती है। द्रौपदी भीम को मारने के लिए अग्रसर होती है। उसके एक हाथ में खप्पर और दूसरे हाथ में कृपाण होता है। उस वक्त भीम अपनी छिंगुली अंगुली काटकर द्रौपदी के खप्पर में रख देता है। इसके बाद द्रौपदी शान्त हो जाती है। जैसे ही द्रौपदी शान्त हो जाती है, वह कहने लगती है - "अब मैं पंडवन को बचाऊँगी कँवरन को खाऊँगी"।

पंडवानी करने के लिए किसी त्यौहार या पर्व की जरुरत नहीं होती है। कभी बी कहीं भी पंडवानी प्रस्तुत कर सकते हैं। कभी-कभी कई रातों तक पंडवानी लगातार चलती रहती है। वर्तमान में पंडवानी गायिका गायक तंबूरे को हाथ में लेकर स्टेज में घूमते हुए कहानी प्रस्तुत करते हैं। तंबूरे कभी भीम की गदा तो कभी अर्जुन का धनुष बन जाता है। संगत के कलाकार पीछे अर्ध चन्द्राकर में बैठते हैं। उनमें से एक "रागी" है जो हुंकारु भरते जाता है और साथ-साथ गाता है, रोचक प्रश्नों के द्वारा कथा को आगे बढ़ाने में मदद करता है।

पंडवानी की दो शैलियाँ हैं - एक है कापालिक शैली जो गायक गायिका के स्मृति में या "कपाल"में विद्यमान है। दूसरी है वेदमती शैली जिसका आधार है शास्र, कापालिक शैली है वाचक परम्परा पर आधारित और वेदमती शैली का आधार है खड़ी भाषा में सबलसिंह चौहान के महाभारत, जो पद्यरुप में हैं।

निरंजन महावर का कहना है "वास्तव में सबलसिंह चौहान ग्रन्थ पर आधारित शैली को पंडवानी न कहकर महाभारत की एक शैली कहा जाना चाहिए चूँकि पंडवानी का छत्तीसगढ़ में प्रचार प्रसार ब्राह्मणेत्तर परधान एवं देवार गायकों के पूर्व में ही स्थापित कर दिया था, इसलिये बाद में विकसित हुई वेदमती शैली के ब्राह्मणेत्तर जाति के कलाकारों ने उसी रुढ़ नाम को अपनी शैली के लिये अपना लिया। उसके कारण वे ब्राह्मण एवं अन्य द्विज जाति के लोगों के इस आरोप से भी बचे रहे कि वे अनधिकृत रुप से महाभारत का प्रवचन करते हैं और दूसरी ओर इन्हें पंडवानी नाम की लोकप्रियता का भी लाभ प्राप्त हुआ।"

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111019|

वेदमती शैली के गायक गायिक वीरासन पर बैठकर पंडवानी गायन करते है। श्री झाडूराम देवांगन, जिसके बारे में निरंजन महावर का वक्तव्य है "महाभारत के शांति पर्व को प्रस्तुत करनेवाले निसंदेह

वे सर्वश्रेष्ठ कलाकार है।" एवं पुनाराम निषाद तथा पंचूराम रेवाराम पुरुष कलाकारों में है जो वेदमती शैली के अपनाये है। महिला कलाकारों में है लक्ष्मी बाई एवं अन्य कलाकर।[6]

कापालिक शैली की विख्यात गायिक है तीजन बाई, शांतिबाई चेलकने, उषा बाई बारले। पंडवानी

गायक गायिकाओं की लम्बी श्रृंखला है - जैसे ऋतु वर्मा, खुबलाल यादव, रामाधार सिन्हा, फूल सिंह साहू, लक्ष्मी साहू, प्रभा यादव, सोमे शास्री, पुनिया बाई, जेना बाई।

पंडवानी के कुछ अंश जो रामहृदय तिवारी जी छत्तीसगढ़ी गीत में प्रस्तुत किये है, कुन्ती और कर्ण संवाद -

कुन्ती कहे नहीं बेटा पाण्डव अउकरण तो दोनों झन मोर बेटा आव, सहोदर भाई आव

आज गंगा नदी के किनारे आज में तोला जन्म देयेंव करण, आज ते मोर जेठ बेटा उस बेटा, लड़ाई झगड़ा काम नइ आवे, जाके पाण्डव से सुन्दर मिल जा बेटा।

माता कुन्ती बार-बार समझावे।

अऊ सच में कहाथौ ते मोर बेटा अस अतका बचन ला करन सुनन लागे भैयाजी।

काकरों दाई मोर काकरि डारों भैया मोर, ये दाई सुन ले कहे करण राजा दुर्योधन के में नमक खाय हौं, अतका दिन ले मोर दाई कहाँ चल दे रेहेस, आज अर्जुन ल में मारंहू कहाथों तब तै मोला रिश्ता बनाय ल आय हस, तें काबर मन दुखी करथस माता, तोर पांच बेटा हा हमेसा जीवित रिही चाहे अर्जुन मरे, चाहे करण मरे अइसे बचन ला करण बोलन लागे भाई जेकर बचन ला मइया कुन्ती सुने भाई भरभर भैय्या मोर रोबन लागे भाई।

हिन्दी में अनुवाद - माता कुन्ती कर्ण से कहती है - हे कर्ण तुम और पाण्डव भाई-भाई हो। सहोदर हो। गंगा के तट पर मैंने तुम्हें जन्म दिया था। तुम मेरे ज्येष्ठ पुत्र हो कर्ण। जाकर पाण्डवों के साथ मिलकर रहो। लड़ाई झगड़े में नुकसान है बेटा। मैं सत्य बोल रही हूँ, तुम मेरे ही पुत्र हो। इतना सुनने के बाद कर्ण बोले - मैंने राजा दुर्योधन का नमक खाया है, इतने दिन तक, जब मै भटक रहा था तब मेरी माँ कहाँ थी? आज जब मैंने अर्जुन को मारने की कसम खाई है तब आप मझे बेटा कहने आ गई। कोई बात नहीं माँ, आपके पाँच पुत्र जीवित रहेंगे - कर्ण या अर्जुन दोनों में से कोई एक नहीं रहेगा।

तब माता कुन्ती रोने लगी -

कृष्ण अर्जुन से कहे हैं -

भगवान हा अर्जुन ला कथे, अर्जुन तैं तो ममता में पड़गे अर्जुन, अर्जुन अरे सोचहु तात कहहुं मै बाणी, अऊ कोऊ न सत्य जगत यह जानी, अऊ जो जानहिं पावस जग माहीं, तो जानत मौसन सब जग माहीं। अऊ धन्य धन्य अर्जुन अस दीन्हें, अऊ कृपा सिन्धु पारस को कीन्हें, अऊ धरहु धनुष मारहु तुम भाई, अऊ जतेक दिखने यह प्रपंच सब विधि रचाई।[7]

हिन्दी में अनुवाद -

कृष्ण अर्जुन से कहते है - तुम तो ममता में पड़ गये, इस संसार में कोई किसी का नहीं है। इस दुनिया में लोग मुसाफिर की तरह चार दिन के लिये आते जाते हैं। जो जैसा कर्म करता है वैसा ही फल

पाता है। हे अर्जुन, मैं जो कह रहा हूँ, उसे ध्यान से सुनो और सोचो, धनुष उठाओ और येे जो सब सामने है उसे मारो, ये सब जो दिख रहा है यह सब भ्रम है, ये तो पहले ही प्रभु द्वारा मारे जा चुके हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111019|

अश्वथामा का वक्तव्य मन की गहराई से जो उभरता -

मैं राज गुरु द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा हूँ। अस्वत्थामा को जीत सके - ऐसी शक्ति कहाँ द्वापर में? लेकिन मेरी शक्ति क्षीण हो गई - जिस दिन धर्मराज ने उच्चारित किया अर्धसत्य वचन "अस्वत्थामाहतो"। मेरी शक्ति क्षीण हो गई जिस दिन गुरु द्रोण ने एकलव्य का अंगूठा लिया - ओ मेरे पिता, ये आपने क्या किया? क्या किया आपने? कर्ण और एकलव्य की अवहेलना कर राजतंत्र को गले लगाया आपने, ऐसा आपने क्यों किया पिता? ऐसा आपने क्यों किया? इस अनीति से आज भी मेरा मन फूट-फूट कर रोता है। (रोने लगता है) ऐसा आपने क्यों किया? द्रौपदी, तुम मुझे क्षमा कर देना - मैं ही तुम्हारे मासूम बच्चों का हत्यारा हूँ - मैं ही द्वापर के भविष्य का हत्यारा हूँ - हाँ मैं हत्यारा हूँ। इसी का तो फल भोग रहा हूँ - ये देख - ये देख मेरे शरीर में उग आए हैं फफोले जिनकी सड़ांध मैं सह नहीं सकता - मैं मरना चाहता हूँ - पर मर नहीं सकता - मर नहीं सकता - अनन्त काल तक अमर रहने का अभिशाप मिल है मुझे - मैं अभिशापित हूँ - द्रौपदी, अमर होने का दण्ड भुगत रहा हूँ, आज तक भुगत रहा हूँ" -

परिणाम

उषा बाई बारले के साथ एक साक्षात्कार –

मेरा नाम उषा बाई बारले है। मैं सात साल की उम्र से ही पंडवानी गा रही हूँ। गाते-गाते मेरे को लगभग पच्चीस छब्बीस साल हो गये। अब मेरे को पंडवानी गाने में बहुत रुची लगती है, बहुत अच्छा लगता है और मैं जीवनभर पंडवानी ही गाऊँगी। बाबा गुरु घासीदास की जीवन गाथा को पंडवानी शैली में ढालकर तीस कैसेट में किया है। छत्तीसगढ़ में मेरे ही कैसेट चल रहे हैं, पंडवानी के माध्यम से कलकत्ता, भोपा, दिल्ली, ग्वालियर, हरियाणा सभी जगह मैं घूम चुकी हूँ - बहुत मजा आता है कार्यक्रम देने में।

पाण्डव की ही कथा को पण्डवानी कहा जाता है। इसके गाने की दो शैली होती है। वेदमती शैली जो बैठकर गाते है हाथ में एकतार और खं लेकर और दूसरे को कापालिक शैली बोलते हैं - भाव के साथ भीम का रोल करते हैं तो भीम नज़र आते हैं, अर्जुन का रोल करते हैं तो अर्जुन न आते हैं, द्रौपदी का रोल करती हूँ तो द्रौपदी - इसको कहते है कापालिक शैली की पंडावनी।

मेरे को पण्डावनी करने में बहुत मजा आता है लेकिन भीम का रोल करने में बहुत ही मजा आता है। और भीम के ही कथा प्रसंग में मैं ज्यादा रुचि लेती हूँ।[8]

ऐसे में गाँव में पंडवानी सुनने में लोग बहुत रुचि लेते हैं। जब तक लोग न छोड़े हम छह सात घण्टे प्रस्तुत करते हैं हमरा कार्यक्रम लेकिन हमें थकावट नहीं आती। रात आठ नौ बजे शूरु करते है, सुबह तक - थकावट नहीं आती। और गाँव वाले इतना खुश होकर सुनते हैं कि बन्द करने पर लड़ाई - झगड़ा हो जाता है। और थोड़ा गाईये, और थोड़ा गाईये लेकिन क्या करे - सुबह हो गया है - खेती बारी का समय हो गया है। ऐसा करकर हमको जबरदस्ती बन्द करना पड़ता है। लेकिन थकावट नहीं होती है।

छत्तीसगढ़ी पंडवानी कथा गायन का जो रूप आज हम देखते हैं वह अपने मूल रूप से बहुत अलग है। देहाती आंगनों, चौपालों से निकलकर नगरीय मंचों तक पहुंचने की पंडवानी गायन की इस यात्रा का स्वरुप क्या है यह जानना भी रुचिकर है। यद्यपि नगण्य मात्रा में ही सही पर अपने मूल रूप में यह परम्परा कुछ गांवों में आज भी जारी है। सन १९४५ के पहले के कालखंड में इसमें क्या क्या परिवर्तन हुए उनका बहुत लेखा-जोखा आज हमें नहीं मिलता परन्तु इसके बाद के समय में क्या घटित हुआ उसके ब्यौरे उपलब्ध हैं। मुख्यधारा के हिन्दू समाज से बढ़ती निकटता और व्यवसायीकरण के प्रति बढ़ते झुकाव ने पंडवानी गायन की परम्परा को वर्तमान रूप तक पहुंचाने में बहुत बड़ी भूमिका निबाही। सन १९४५ में पंडवानी के पितामह कहलाने वाले श्री झाडूराम देवांगन का उदय हो रहा था उनके उदय के साथ ही पंडवानी की प्रस्तुति और स्वरुप में व्यापक परिवर्तन हुए हैं

यदि हम अतीत की ओर देखें तो पते हैं कि समूचे गोंडवाना क्षेत्र में गोंड जनजाति समृद्ध किसान और सामाजिक रूप से प्रभावशाली थी। इनके यहाँ कथागीतों के आयोजनों की परिपाटी भी थी। मान्यता है कि यह कथागीत आरम्भ में किसी गोंड द्वारा ही गए जाते थे, उन्ही कथागायकों के परिवार समूहों ने कालांतर में एक कथा वाचक जाति का रूप ले लिया। परधान, देवार और भिम्मा एसी ही जनजातियां हैं। इन समुदायों के सामान्य लोग एवं जनजातियों के शोधकर्ता सभी इस बात पर सहमत हैं कि परधान, देवार और भिम्मा समुदाय गोंड जनजाति की ही उपशाखाएँ हैं। यह लोग मानते हैं कि इनके पूर्वज गोंड ही थे। यह तीनों ही समुदाय घुमक्कड़ कथावाचक-गायक हैं और इनके मुख्य परम्परागत जजमान गोंड कृषक रहे हैं। वर्ष में कम से कम एक बार ये अपने जजमानों के घर अवश्य जाते हैं और कथागायन कर दान में धन-धन्य प्राप्त करते हैं। परधान लोग बाना नामक वाद्य बजाकर, देवार लोग सरांगी/सारंगी बजाकर तथा भिम्मा लोग तूमा बाजा बजाकर नृत्यगान करते हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111019|

परधान कथावाचक सदियों से गोंडवानी, पंडवानी और रामायनी जैसे वाचिक आख्यानों का गायन करते रहे हैं। डॉक्टर सोनऊराम निर्मलकर जिन्होंने देवार समुदाय पर गहन शोध किया है के अनुसार देवार समुदाय के कथागायक भिक्षाटन के दौरान अनेक अन्य कथानकों के साथ महाभारत की छोटी-छोटी कथाएं (पंडवानी) भी गाते थे। प्रसिद्ध विद्वान् शेख गुलाब ने भिम्मा समुदाय पर लिखी अपनी पुस्तक में लिखा है कि भिम्मा समुदाय के कथागायक साल में एकबार अपने गोंड जजमानों के यहाँ वर्षा के देवता भीमसेन के कथागीत गाते हैं जिससे प्रसन्न होकर भीमसेन पानी बरसाते हैं।

उपरोक्त तथ्यों से यह ज्ञात होता है कि पंडवानी अथवा महाभारत कथा के चरित्रों से सम्बंधित कथानकों का गायन वर्तमान छत्तीसगढ़ क्षेत्र में सदियों से होता आ रहा है। यह पारम्परिक कथा गायन अनपढ़ और नीची समझी जाने वाली जातियों के लोगों द्वारा किया जाता था जो पूर्णतः स्थानिय जनश्रुतियों, विश्वासों और मान्यताओं पर आधारित था। यह लोग न तो शिक्षित थे और न ही इनकी पहुँच शास्त्रों तक थी। पीढ़ियों से अपने पूर्वजों द्वारा अगली पीढ़ी को हस्तांतरित की गयी दंतकथाओं को अपनी स्मृतियों में संजोये इन कथगायकों ने इस सांस्कृतिक विरासत को जीवित बनाए रखा। क्योंकि यह कथाएं श्रुति और स्मृति पर आधारित थीं अतः इनमे एकरूपता न होकर विविधता मुखर थी। गायकों की व्यक्तिगत कल्पनाशीलता और तात्कालिकता का प्रस्तुति में बहुत प्रभाव रहता था।

पंडवानी के पितामह झाडूराम देवांगन के वरिष्ठ शिष्य चेतन देवांगन बताते हैं उन्होंने सुना है कि बहुत पहले शिवरीनारायण क्षेत्र के सतनामी समुदाय लोग अपनी चौपालों में उनकी वाचिक परम्पराओं प्रचलित घटोत्कचव ब्याह नकुल ब्याह एवं सहदेव ब्याह जैसे महाभारत कथा प्रसंग गाते थे। बाद में झाडूराम देवांगन से पहले अंग्रेजी शासनकाल में यहाँ रावण-झीपन गांव के नारायण लाल वर्मा संभवतः पहले ज्ञात पंडवानी गायक हुए हैं। प्रतीत यह होता है कि पंडवानी के वर्तमान रूप का प्रचलन संभवतः नारायण लाल वर्मा द्वारा किया गया।

मैंने स्वयं सन २०१७ में मंडला जिले के पाटनगढ़ गांव के गोंड आदिवासी समाज में प्रचलित गोंडवानी, पंडवानी और रामायनी कथागीतों का अध्ययन किया है। इस गांव ने अपनी प्राचीन जातिगत स्मृतियों और परम्पराओं को बखूबी सहेज रखा है। यह गांव मुख्यतः परधान गोंड आदिवासियों का ही है। इनके पूर्वज बाना नामक पारम्परिक वाद्य बजाकर अपने गोंड जमीदारों को उनकी मिथ कथाएं और वंशावली गाकर सुनाया करते थे। साजा नामक वृक्ष की लकड़ी से बनाए गए इस वाद्य में गोंडो के सर्वाधिक शक्तिशाली और पूज्य बड़ा देव का वास मन जाता है। वर्तमान में बहुत ही काम ऐसे परधान बचे हैं जिन्हें पुरातन पारम्परिक किंवदंतिया याद हैं और जो उन्हें गाकर सुना सकते हैं। पाटनगढ़ गांव में ऐसे दो या तीन लोग बचे हैं, लगभग साठ वर्षीय, बाला राम व्याम उन्हीं में से एक हैं। वे तीन प्रकार के कथानकों का गायन करते हैं- गोंडवानी, रामायनी और पंडवानी। गोंडवानी सर्वाधिक लोकप्रिय है और प्रचलन में है। इसमें गोंड देवलोक एवं जनश्रुतियों से सम्बंधित कथागीत प्रस्तुत किये जाते हैं। परन्तु इनमें महाभारत कथा के अनेक पात्र एवं घटनाएं इस प्रकार घुलमिल गए हैं कि यह भ्रम होता है कि हम गोंडवानी सुन रहे हैं या पंडवानी? मुझे उन्होने गोंड राजा द्वारा दिल्ली के बादशाह अकबर के दरबार में तलवार के एक ही वार में सेमल वृक्ष के तने को काट डालने का वृतांत सुनाते-सुनाते कब उसमे गुरु द्रोणाचार्य द्वारा अपने पांडव शिष्यों को भीषण अकाल से बचाने का उपक्रम शुरूकर दिया, पता ही नहीं चला।[9]

प्रसिद्ध विद्वान् शेख गुलाब ने सन १९५० से सन १९६० के मध्य गोंडवाना क्षेत्र में गाए जाने वाले गोंडवानी, पंडवानी और रामायनी कथागीतों का संकलन किया जिसे आदिम जाति कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश एवं नई दिल्ली स्थित इंदिरा गाँधी राष्ट्रिय कला केंद्र ने प्रकाशित किया है। गोंड जनजाति में प्रचलित रामायनी और पंडवानी का यह संस्करण अपने आप में अनूठा है जो रामायण एवं महाभारत की स्थापित कथाओं से अनेक स्तरों पर भिन्न है। गोंड पंडवानी में राम, लक्षमण तथा कौरव-पांडव सभी एक ही समय में हुए हैं, इतना ही नहीं वे समय-समय पर एक दूसरे की सहायता से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करते हैं। जब लक्ष्मण को इंदर कामिनी इंद्रलोक लेजाकर बकरा बना देती है तब भीमसेन ही उन्हें बचाकर लाते हैं।एक अन्य प्रकरण में जब राम और सीता को यह संदेह होता है कि लक्ष्मण अपना सत गवां चुके हैं तब सच्चाई का पता लगाने के लिए वे पांडवों की सहायता लेते हैं।

पांडवों और विशेषतौर पर भीमसेन से गोंड आदिवासी विश्वासों का गहरा नाता है। गोंड उन्हें वर्षा लाने वाला देवता मानते हैं। विद्वान् शेख गुलाब ने लिखा है, गोंड विश्वास के अनुसार किसी समय भीषण सूखा पड़ा। पानी नहीं बरसा, फसल नष्ट हो गयी। पशु-पक्षी सब भूखे मरने लगे। गोंड ठाकुर खेती के लिए पानी को तरसने लगे। पानी नहीं बरसेगा, खेती नहीं होगी तो लोग क्या खाएंगे। पानी के लिए सब सोच में पड़ गए, गुनिया और ओझाओं ने टोने-टोटके किये। देवताओं को प्रसाद चढ़ाया गया, बलि दी गई पर कुछ नहीं हुआ। गोंड ठाकुर जानते थे कि पानी बरसाने वाला भीम है, उन्ही की कृपा से पानी बरसता है। वे बादलों में पानी भरकर लाते हैं तब जाकर पानी की वर्षा होती है। इस बार भीम सेन नाराज हो गए हैं उनके प्रसन्न होने पर ही पानी बरसेगा। वे भीमसेन को खुश करने के उपाय सोचने लगे। भीमसेन एकबार खुश होकर बजा बजाकर नाचे थे तब पानी बरसा था। यह सोच कर उन्होंने भीमसेन को खुश करने के लिए भीम नाचा की तैयारी शुरू करदी। गांव में भीम पूजा की तैयारी होने लगी। एक गोंड बालक जिसका नाम मूमा था और जो बड़ा ही संगीत प्रिय था वह तूमा बजा लेकर गीत गाने लगा। उसकी स्त्री उसके बाजे की धुन पर नाचने लगी। उनकी देखा देखी गांव के अन्य

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111019|

युवक-युवतियां भी तूमा बजा लेकर गाने-नाचने लगे। फिर तो आकाश में बदल घुमड़-घुमड़कर आने लगे। तेज घनघोर बरसात होने लगी और इस प्रकार भीमसेन पूजा का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

शेख गुलाब द्वारा वर्णित एक अन्य किंवदंती के अनुसार तूमा भीम का बाजा है, इसमें केवल एक पहरा होता है। वे जब भी उमंग में होते तूमा बाजा बजाने लगते और द्रोपदी इसे सुनकर ख़ुशी से नाचने लगती थी। जब पांडवों पर संकट आया तब वे बैराट में नौकरी करने लगे। भीम को नौकरी नहीं मिली तो वे तूमा लेकर बजाने-नाचने लगे और इसीसे अपना पेट पालने लगे। उसी नगर के तीन युवकों लमसेना को उनका तूमा बाजा बहुत पसंद था वे छिपकर तूमा बजाने का अभ्यास करते थे। कुछ समय बाद पांडव अपनी राजधानी वापस चले गए। बैराट के लोग बहुत दुखी हो गए कि अब उन्हें भीम का गीत और तूमा बाजा सुनने को नहीं मिलेगा। उस समय वे तीनों लड़के भीम के पास आये और हाथ जोड़कर भीम से प्रार्थना की कि वे अपनी निशानी के रूप में वह बाजा उन्हें दे जाएं। भीम बोले बाजा तो में दे दूंगा पर बजायेगा कौन? लमसेना लड़कों ने तूमा बाजा उठाया और उसी धुन में बजाने लगे, लमसेनिन नाचने लगीं। भीमसेन खुश हो गए। उन्होंने तूमा बाजा लमसेना को दे दिया, वे उसे बजाने लगे। लोग उन्हें भीम का प्रतिरूप मानकर उनका आदर से गीत सुनने लगे, उन्हें भीमा कहने लगे और इस प्रकार एक अलग जाति बन गयी जो भिम्मा कहलाई। गोंड ठाकुर साल भर में इन्हें एकबार अवश्य बुलाते। ये गीत गाते, नाचते और गोंड इन्हें दान देते। गोंड मानते थे कि ये पांडव हैं जो उनके घर नाचने आये हैं। उनका यह अटल विश्वास होगया कि यदि भिम्मा एक बार उनके गांव में नाच जाये तो अकाल नहीं पड़ेगा, बरसात अवश्य होगी।

आज भी समूचे छत्तीसगढ़ के गावों में भीमा देव के देवस्थान होते हैं, लकड़ी का एक मोटा गोल-मटोल खम्बा अथवा प्रतिमा भीमा देव का प्रतिनिधित्व करती है। बस्तर क्षेत्र में भीमा वर्षा के देव के रूप में पूजे जाते हैं। प्रति वर्ष उनकी भीमा जात्रा भादों माह के शुक्रवार को गांव भर के लोग मिलकर मानते हैं। यदि वर्षा अच्छी तरह हो गयी तो नारियल, धूप बत्ती से सामान्य पूजा करते हैं परन्तु वर्षा न होने की दशा में भीमा जात्रा सारा गांव मिलकर बड़े स्तर पर आयोजित करता है । गोंड आदिवासी युवक-युवतियां इसमें बढ़-चढ़ कर नृत्य-गान करते हैं। भीमा देव का सिरहा बुलाया जाता है उस पर चढ़कर भीमा देव खेलता है। उसे मेंढा या भैंसा की बलि दी जाति है। वह प्रसन्न होकर अच्छी वर्षा का आश्वासन देता है।[9]

संभवतः यह गायन-नर्तन पंडवानी कथा गायन के आदिरूप हैं। जिसका सम्बन्ध धीरे-धीरे जीवकोपार्जन से जुड़ गया। सदियों से गोंड कृषकों से जुड़ी इस प्रथा को इस क्षेत्र के अन्य कृषकों का भी संरक्षण मिलना आरम्भ हो गया जिससे पंडवानी कथा गायन का स्वरुप समुदायगत न रहकर क्षेत्रीय हो गया और पंडवानी जन-जन में लोकप्रिय हो गई। बीसवीं सदी तक आते-आते पंडवानी एक विशिष्ट कालरूप के रूप में जानी जाने लगी थी और उसके गायक अपनी व्यक्तिगत पहचान बनाने लगे थे। इनमें सबसे प्रमुख नाम चीतल राम देवांगन, पूनाराम निषाद और झाडूराम देवांगन के हैं।

नवीन सागर को १९८७ में दिए एक साक्षात्कार (चौमासा में प्रकाशित) में प्रसिद्ध पंडवानी गायक श्री झाडूराम देवांगन ने कहा था कि देश की स्वतंत्रता प्राप्ति तक तक छत्तीसगढ़ में पंडवानी का स्वरुप पूर्णतः पारम्परिक ही था जिसका शास्त्र से कोई सम्बन्ध नहीं था। दंतकथा के रूप में महाभारत को जैसा सुना-समझा वैसा ही सुना देते थे। इस पारम्परिक शैली को कापालिक शैली भी कहा गया है। उसमें अभिनय पक्ष नहीं था। पंडवानी गायक पहले कुछ देर गाते फिर उसके बारे में कुछ बतादेते थे। उनकी गाने की धुन भी अलग थी। रागी होता था पर केवल हूँका देता था आज जैसी उसकी एहमियत नहीं थी। खंजरी और तम्बूरा केवल दो वाद्य बजाते थे। उस समय तक पंडवानी गायी जाती थी महाभारत नहीं, पंडवानी दन्त कथा है और महाभारत शास्त्रमति।

वे कहते हैं, आरम्भ में तो परधान लोग ही गाते थे बाद में अन्य क्षेत्रों में अन्य समुदायों के लोग भी पंडवानी सुन-सुनकर गाने लगे होंगे। हमने भी तो स्वप्रेरणा से गाना शुरू किया था। हमारे दुर्ग जिला में दंतकथा वाली पंडवानी की कोई परंपरा नहीं थी, हमने तो सबल सिंह चौहान द्वारा लिखित महाभारत की पुस्तक का अध्ययन करके कथा याद की उसका भावार्थ समझा तब गाना शुरू किया। हमने सोचा हम इस शस्त्रबद्ध कथा को पारम्परिक पंडवानी शैली में नहीं गायेंगे वार्ना लोग इसे भी पुरानी दंतकथा ही समझेंगे। इसलिए हमने शास्त्रीय संगीत पर आधारित धुन बनाई। आरम्भ में केवल कथा गायन और भावार्थ करते थे पर धीरे-धीरे जैसे-जैसे इसमें उतरते गए तो कथा के चरित्र और उनकी गतिविधियां कल्पना में उभरने लगीं। जैसी घटना का वर्णन करते वैसी ही हमारी शारीरिक चेष्टाएँ होने लगीं और इस प्रकार पहली बार पंडवानी गायन में शास्त्र सम्मत कथा (वेदमति)और अभिनय पक्ष का प्रवेश हुआ, यह सन १९५० के आस-पास की बात है। झाडूराम देवांगन कहते हैं फिर हमारे मन में आया कि यह महाभारत की कथा है क्यों न हम इसे पेटी (हारमोनियम) के साथ गाएं, बस पेटी साथ बजवाने लगे। यह गायन बैठकर किया जाता था।

यद्यपि उस समय भी चीतल राम देवांगन और पूनाराम निषाद प्रसिद्ध पारम्परिक पंडवानी गायक थे। परन्तु तत्कालीन छत्तीसगढ़ में झाडूराम देवांगन की वेदमति महाभारत पंडवानी का ऐसा व्यापक प्रभाव पड़ा कि लोकश्रुति आधारित पंडवानी गायन लगभग खत्म हो गया और शास्त्रसम्मत पंडवानी अपनी नयी गायन शैली के साथ लोकप्रिय हो गयी।[8]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111019|

सन १९७० का दशक तक आते-आते पंडवानी गायन की स्थिति और भी बदल गयी थी। पारधी या बहेलिया जाति की तीजन बाई द्वारा पंडवानी गायन आरम्भ करने के साथ छत्तीसगढ़ी पंडवानी गायन की दुनियां में एक नए अध्याय का सूत्रपात हुआ।

सन १९८० के दशक में देश-विदेश में आयोजित हो रहे भारत महोत्सवों ने देशज भारतीय कलाओं, विशेष रूप से प्रदर्शनकारी कलाओं के लिए अपार संभावनाओं के द्वार खोल दिए थे। जिसके चलते अनेक प्रतिभशाली युवक-युवतियां पारम्परिक कलाओं में अपना भविष्य तलाशने हेतु प्रन्नशील थे। इस दशक के मध्य तक तक आते-आते अनेक पुरुष और महिला पंडवानी गायक अपनी पहचान बना चुके थे। इनमें प्रभा यादव, खूबलाल यादव, रामाधार सिन्हा, लक्ष्मी बाई सतनामी, जौना बाई, हीरा बाई सतनामी, पुनिआ बाई और फूल सिंह साहू उल्लेखनीय हैं। क्योंकि यह नए गायक इस विधा को एक व्यवसाय के रूप में अपना रहे थे और उनकी पंडवानी गायन की पारम्परिक पृष्ठभूमि नहीं थी अतः उन्हें अलग किस्म की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था।

निष्कर्ष

सन १९८५ में श्री निरंजन महावर को दिए एक साक्षात्कार (चौमासा में प्रकाशित) में तीजनबाई ने कहा था, बचपन से मेरी आवाज़ अच्छी थी। मैं ऊँचे स्वर में ददरिया, करमा और सुवा गीत गया करती थी। एकबार पास के गांव की एक डोकरी हमारे घर आई और उसने मुझे तम्बूरा दिखाकर कहा कि तू इसपर काम कर। मैंने तम्बूरा बजाना शुरू कर दिया। मेरे नाना बिरिजलाल पंडवानी जानते थे, हमारे गांव में भी एक-दो बार पंडवानी गाने वाले आए थे, में उन्हें सुन-सुनकर पंडवानी याद करने लगी। जब कुछ याद होगया तब एक बार तम्बूरा और खंजड़ी लेकर गांव वालों के सामने एक कार्यक्रम किया। पर मेरे पति को मेरा यह काम पसंद नहीं आया, उसने मंच पर ही मेरी पिटाई करदी। मैं पढ़ी-लिखी नहीं थी, मुझे आधी-अधूरी कथा आती थी। तब मैंने उस समय के एक अनुभवी रागी उम्मेदसिंह से पंडवानी कथा सीखना आरंभ किया। उन्ही से मैंने विभिन्न पात्रों के अभिनय का अभ्यास किया। और अंततः पंडवानी गायन में अपना स्थान बनाया। क्योंकि मैं पढ़ी-लिखी नहीं थी इसलिए मैंने सब कुछ शास्त्र पढ़कर नहीं लोगों से कथा सुनकर याद किया और गाया जो कापालिक शैली में रखा जाता है। में झाडूराम देवांगन और पूनाराम जी की तरह बैठकर नहीं, खड़े होकर व् नाच-नाच कर पंडवानी गाती हूँ। मेरी मण्डली में रागी, तबला वादक, पेटी मास्टर और ढोलकहा रहता है।

इस प्रकार हम देखते हैं पंडवानी का वर्तमान लोकप्रिय रूप अपने पारम्परिक मूल रूप से बहुत दूर तक की यात्रा तय कर चुका है। छत्तीसगढ़ की पंडवानी का वर्तमान नगरीय रूप अपनी अनुष्ठानिक एवं सामाजिक ऊर्जा व महत्ता खोकर लोकरंजन का एक माध्यम बन गया है। बदले हुए परिवेश में संभवतः इस कालरूप के जीवित बने रहने का यही एक रास्ता बचा हो।[9]

संदर्भ

1) रामायनी, शेख़ गुलाब, आदिमजाति कल्याण विभाग, छिंदवाड़ा, मध्यप्रदेश, १९६४
2) देवार की लोक गाथाएं, डॉ सोनउ राम निर्मलकर, बिलासा कला मंच, बिलासपुर (छत्तीसगढ़), २००३
3) चौमासा, वर्ष ३, अंक ८, मार्च-जुलाई १९८५, आदिवासी लोक काला परिषद, भोपाल, मध्यप्रदेश
4) चौमासा, वर्ष ४, अंक १२, फरवरी १९८७, आदिवासी लोक काला परिषद, भोपाल, मध्यप्रदेश
5) महाभारत की वाचिक परंपरा का लोकस्वरूप 'पांडवानी'
6) पंडवानी स्मारिका
7) प्रभा यादव: पंडवानी गायन में परम्परा और निजिता
8) छत्तीसगढ़ की महिला पंडवानी गायिकाएं
9) पंडवानी और कीचक वध प्रसंग

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 8.118

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com